इकाई 16 असमान क्षेत्रीय/राष्ट्रीय योजना

इकाई की रूपरेखा

16. 0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 क्षेत्रीय असंतुलन के कारण

16.2.1 प्राकृतिक असंतुलन

16.2.2 कृत्रिम असंतुलन

16.2.3 ऐतिहासिक कारक

16.3 संतुलित पर्यटन योजना

16.3.1 नीति की आवश्यकता

16.4 संतुलित विकास के लिए दिशा निर्देश

16.5 सारांश

16.6 शब्दावली

16.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

पर्यटन विकास और क्षेत्रीय योजना के साथ उसका संबंध नाटकीय परिवर्तन के दौर में हैं। हम जानते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्राकृतिक संसाधन होते हैं। ये विविधताएं ऐतिहासिक एवं सामाजिक मतभेदों के साथ मिलकर असंतुलित क्षेत्रीय आर्थिक विकास का कारण बनती हैं। स्वतंत्रता के पश्चात पर्यटन विकास के लिए अनुकूल वातावरण के विकास पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। नदियों का जल और समुद्री तटीय क्षेत्र प्रदूषित हो चुके हैं और वनों को अनियोजित ढंग से काटा गया है। शहरी पर्यावरण घुटन में परिवर्तित हो चुका है और ग्रामीण समूह बीमारी गरीबी और लूटमार से त्रस्त हैं। यह स्पष्ट है कि क्षेत्रीय असंतुलन से या तो प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों का कम उपयोग होता है या बिलकुल उपयोग नहीं होता। इसका परिणाम यह है कि विकास में पिछड़े हुए क्षेत्रों और विकसित क्षेत्र के मध्य अंतर बढ़ता जा रहा है। संतुलित क्षेत्रीय विकास प्राय: क्षेत्र के संसाधनों का अनुकूलतम एवं उचित उपयोग बनाए रखता है। यह निवासियों को आर्थिक विकास का पूरा लाभ भी देता है। अत: इस इकाई में हमारा उद्देश्य आपको :

- असंतुलन की समस्याओं से अवगत कराना है,
- इन असमानताओं को न्यूनतम कर देने की विधियों को समझाना है,
- उचित नीति और दिशा निर्देश के महत्व को पूरी तरह समझाना है,
- संतुलित आर्थिक विकास के क्षेत्रों में पर्यटन की संभावनाओं की जानकारी देना है, और
- क्षेत्रीय/राष्ट्रीय पैमाने पर नकारात्मक प्रभाव रहित पर्यटन को व्यावसायिक रूप में बढ़ावा देने के लिए तैयार करना है।

16.1 प्रस्तावना

क्षेत्रीय विकास की अवधारणा को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है : विभिन्न भौगोलिक खंडों के मध्य इस प्रकार समानता लाने का व्यवस्थित एवं आयोजित प्रयास करना चाहिए कि निम्नलिखित क्षेत्रों में अधिक अन्तर न हो।

- प्रतिव्यक्ति आय,
- मजदूरी और माल की उपलब्धता,
- कृषीय और औद्योगिक उत्पादन,
- रोजगार के अवसर, एवं
- सामान्य जीवन स्तर (अधिसंरचनात्मक सुविधाओं सहित)

इस प्रकार के समानता के प्रयासों की अन्तर्निहित ऐतिहासिक एवं स्थलीय कारकों के कारण कुछ क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की तुलना में सदैव लाभ की स्थिति में रहेंगे। हमें केवल यह करना है कि हम आवश्यक बाह्य सहायता दें ताकि अन्य क्षेत्रों का भी विकास किया जा सके। पर्यटक केंद्रों के रूप में पिछड़े हुए क्षेत्रों के विकसित होने के मार्ग में अधिसंरचनात्मक सुविधाओं जैसे सड़कों, रेल, एवं वायुमार्गों, टेलीफोन और टेलेक्स आदि की सुविधाओं का अभाव सबसे बड़ी बाधा है।

अब यह समझा जा रहा है कि अल्प विकसित प्रदेश को आयोजित कार्यक्रमों और नीतियों के द्वारा अत्यधिक उन्नत किया जा सकता है। खजुराहो इसका ज्वलंत उदाहरण है। लगभग चालीस वर्ष पूर्व खजुराहो एक अलग-थलग और अज्ञात गाँव था। आज वह विश्व के पर्यटन मानचित्र पर स्थान निर्धारित कर चुका है और प्रतिवर्ष हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है। पर्यटक सारे वर्ष वायु, रेल और सड़क परिवहन से नवीं से तेरहवीं शताब्दी ई. के मध्य निर्मित चन्देल राजाओं के वास्तुशिल्पीय अद्भुत मंदिर और श्रृँगारिक मूर्तियों को देखने के लिए आते हैं। परिणामस्वरूप इस स्थान ने स्थानीय लोगों को रोजगार दिलाया है और इस प्रकार क्षेत्रीय असंतुलन को किसी हद तक सुधारने का प्रयास किया है।

इस तरह ऐसे ही बहुत से विभिन्न महत्ववाले क्षेत्र जहाँ कच्चे माल या अन्य संसाधनों के अभाव में औद्योगिक विकास संभव नहीं हो पाया है उन्हें उचित योजनाओं द्वारा विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार के विकास से अप्रशिक्षित श्रमिकों को नौकरियाँ मिलेंगी और इस प्रकार क्षेत्र समृद्ध होगा।

आनेवाले भागों में हमने इसी संदर्भ में विशेष रूप से राष्ट्रीय परिदृश्य में क्षेत्रीय असमानताओं का लेखा जोखा लिया है। हमने कुछ के लिए पर्यटन योजना की दृष्टि से विकास संभावनाओं के सुझाव भी दिए हैं।

16.2 क्षेत्रीय असंतुलन के कारण

आमतौर से यह समझा जाता है कि पर्यटन विकास क्षेत्रीय असंतुलन उत्पन्न करता है। हालाँकि स्थिति इससे थोड़ी भिन्न है। पर्यटन का उपयोग क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने में किया जा सकता है। अगले भाग में हम इस पर विचार विमर्श करेंगे। यहाँ हम केवल ऐसी असमानताओं के कारणों के विषय में सविस्तार बात करेंगे। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हमने कार्यरत कारकों को तीन सामान्य वर्गों में विभक्त कर दिया है।

16.2.1 प्राकृतिक असंतुलन

विभिन्न प्रदेशों के संभावित पर्यटन क्षेत्रों में प्राकृतिक, मानवीय और अन्य स्थलीय लाभों जैसे संसाधनों का वितरण असमान है। यहाँ तक कि समान संसाधनों वाले क्षेत्र प्राकृतिक दृश्य, स्थलाकृति जलवायु परिस्थितियों आदि की दृष्टि से भिन्न हो सकते हैं। बेहतर स्थिति वाले क्षेत्रों में विकास या प्रगति ज्यादा होती है। इस प्रकार विकास की प्रक्रिया सर्वप्रथम ऐसे क्षेत्रों में प्रारंभ होती है जो प्राकृतिक आकर्षणों या लाभों से सम्पन्न हैं। जैसे-जैसे विकास की प्रक्रिया आगे बढ़ती है वैसे वैसे अधिसंरचनात्मक सुविधाओं, बाजार, कुशल कारीगरों आदि के उपलब्धता के कारण निवेश के अवसर और पर्यटकों की गतिशीलता बढ़ती है। इस प्रकार के विकास के कारण कम विकसित या अविकसित

क्षेत्रों के संसाधनों का स्थानान्तरण विकसित हो रहे क्षेत्रों की ओर होने लगता है। इस प्रकार पिछड़े हुए क्षेत्रों का संसाधन धीरे-धीरे निष्कासित होते रहता है और विकसित क्षेत्र इन पिछड़े क्षेत्रों की कीमत पर सम्पन्न होते रहते हैं। सुविधा सम्पन्न देशों और प्रतिकुल परिस्थितियों वाले देशों के मध्य विकास के प्रत्येक चरण के साथ अन्तर बढ़ता जाता है। परंतु एक संभावना यह भी है कि विकसित क्षेत्र अपने अविकसित प्रदेशों के विकास के लिए अवसर पैदा करें। किंतु जिस अन्तर की हम बात कर रहे हैं वह फिर भी बना रहेगा।

16.2.2 कृत्रिम असंतुलन

कृत्रिम असंतुलन उन नीति बनाने वालों के कारण होता है जो जाने अनजाने विकासीय योजना बनाते समय या उसके कार्यान्वयन में क्षेत्रीय संसाधनों पर अधिक ध्यान नहीं देते। आमतौर से असंतुलित नीतियाँ बनाने वालों के पक्ष में लोग यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि सीमित संसाधनों और क्षेत्र में उनके असमान वितरण के कारण एक ही समय में उसी प्रकार या उसी पैमाने पर प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करना संभव नहीं है। इसके अलावा वे यह भी कहते हैं कि किसी विकासशील अर्थव्यवस्था में सीमित संसाधनों का ऐसे विकासशील केंद्रों की सीमित संख्या में निवेश उचित है जिनमें विकास की बेहतर सुविधाएं हैं। ऐसा निवेश आस पास पिछड़े हुए क्षेत्रों को विकसित करने के लिए पर्याप्त अधिशेष एकत्र करेगा। यह एक ओर तो आर्थिक क्षमता को बनाए रखने में सहयोग देगा और दूसरी ओर संसाधनों के अधिकतम उपयोग को सुनिश्चित करेगा। इस प्रकार की विकास नीति में कुछ क्षेत्रों की सहायता की जाती है और अन्य कुछ क्षेत्रों के विकास को लंबे समय तक के लिए स्थगित कर दिया जाता है। यहाँ तक कि पहले चुने गए क्षेत्र का विकास पूरा हो जाने के बाद भी आस पास के पिछड़े हुए क्षेत्रों को विकसित करने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया जाता। इसका परिणाम यह निकलता है कि क्षेत्रों के मध्य अंतर बढ़ता जा रहा है और इसके कारण क्षेत्रीय असंतुलन को बढ़ावा मिलता है।

16.2.3 ऐतिहासिक कारक

क्षेत्रीय असंतुलन ऐतिहासिक कारकों से भी पैदा होता है जिसका कारण कुछ क्षेत्रों की आरंभ में प्राप्त सुविधाओं और लाभों या औपनिवेशिक शासन काल में चलाए गए अनियोजित सार्वजनिक कार्यक्रमों को बताया जाता है। जिन क्षेत्रों की ओर विभिन्न शासकों या प्रशासकों का ध्यान गया वे तीव्र गति से विकसित हुए और इस प्रकार विकसित क्षेत्र बन गए। महानगरों जैसे बम्बई (मुम्बई) कलकत्ता, दिल्ली और मद्रास (चेन्नइ) के विकास का अधिक श्रेय ऐतिहासिक कारकों को दिया जा सकता है। इस वास्तविकता का हमें ज्ञान है कि 1912 से पूर्व बंगाल, बिहार और उड़ीसा सामुहिक रूप से बंगाल प्रदेश कहे जाते थे। कुछ ऐतिहासिक कारणों से बंगाल ने ब्रिटिश सरकार का साधन आकर्षित किया किंतु प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों से समृद्ध बिहार उपयुक्त ध्यान अपनी ओर नहीं खींच सका। परिणामस्वरूप बिहार और उड़ीसा की तुलना में बंगाल में विकास की गति बहुत तीव्र थी। यह एक महत्वपूर्ण कारक है जिसने बिहार को आज भी भारत का पिछड़ा हुआ प्रदेश बनाए रखा। अत: अत्यधिक समृद्ध प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत से सम्पन्न होने के बावजूद बिहार में पर्यटन का न्यूनतम विकास हुआ।

बोध प्रश्न 1

1) क्षेत्रीय असंतुलन से आप क्या समझते हैं ? इनपर चार पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) असमान विकास के लिए मानव को कहाँ तक उत्तरदायी माना जा सकता है ? बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

16.3 संतुलित पर्यटन योजना

किसी क्षेत्र के संतुलित सामाजिक विकास के लिए उचित योजना की आवश्यकता होती है। इसे विवेकपूर्ण रूप से संसाधनों के अधिकतम उपयोग पर आधारित होना चाहिए। ताकि अधिक से अधिक पर्यटक आकर्षित हो सकें किंतु इसमें आस पास के क्षेत्रों को नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए। हम जानते हैं कि पर्यटन उद्योग में पिछड़े हुए क्षेत्रों तक में रोजगार और आर्थिक विकास उत्पन्न करने की पर्याप्त संभावना है। यदि हम इस संभावना को सही दिशा दे सकें तो इससे क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने में मदद मिलेगी। होटलों, रेस्तरॉं, पर्यटक दुकानों ट्रैवेल एजेंसियों और परिवहन में प्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न करने के अतिरिक्त यह उद्योग सहायक क्षेत्रों, जैसे हथकरघा, हस्तशिल्प, कला एवं कौशल, चीनी के बर्तन का उपयोग, साज समान उद्योग और अन्य कई उद्योगों में रोजगार के अवसर उपलब्ध करकर गुणक रोजगार प्रभाव उत्पन्न करता है।

एक बार जब पर्यटक केंद्र पूरी तरह स्थापित हो जाता है तो यहाँ जन समूह, समान और धन का निरंतर प्रभाव होते रहता है। आंतरिक प्रभाव बढ़ने से क्षेत्र का विस्तार और फैलाव होता है और अनिवार्य रूप से पर्यटक अभिरुचि के नए उप-क्षेत्रों का विकास करता है। इन आकर्षण केंद्रों के चारों ओर विभिन्न रिहाइशी और समानों की आपूर्ति के क्षेत्र बन जाते हैं। स्थानीय जनता इससे नई और सुधरी हुई अधिसंरचनात्मक सुविधा के कारण अधिक लाभान्वित होंगे। इस प्रकार पर्यटन विकास के लिए एक सुव्यवस्थित एवं समग्र पर्यटन योजना की जरूरत होती है। निर्माण कर्ताओं को चाहिए कि वे अपने वर्तमान स्थानीय पर्यावरण की प्रकृति का मूल्यांकन करें क्योंकि उन्हें ऐसे परिवर्तन करने होंगे जिन्हें वह सामाजिक, संस्कृति और आर्थिक दृष्टि से लाभदायक समझते हैं। इसका कुल मिलाकर परिणाम अन्ततः अच्छे पर्यावरण और सशक्त पर्यावरण उद्योग के रूप में सामने आएगा।

16.3.1 नीति की आवश्यकता

उपर्युक्त परिचर्चा में हमने देखा कि पर्यटन किस प्रकार क्षेत्रीय असंतुलन को सुधारने में प्रभावी रूप से सहयोग दे सकता है। इसके साथ ही साथ इस बात की अत्यधिक आवश्यकता महसूस की गई थी कि वाछिंत परिणाम के लिए नीति संबंधी एक समुचित दृष्टिकोण अवश्य होना चाहिए। ऐसी नीति का बुनियादी जोर वृद्धि की दर को बढ़ाने की ओर होना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अधिकतम और न्यूनतम विकास के क्षेत्रों के मध्य अन्तर बढ़ जाने की अपेक्षा वे एक दूसरे के निकट आ जाएँ। योजना यह होनी चाहिए कि क्षेत्र विकास की ऐसी स्थिति में पहुँच जाएँ जहाँ वह आत्म निर्भर हो सकें, बचत उत्पन्न कर सकें, बाहर से पूँजी आकर्षित कर सकें और इस प्रकार अपने आप बढ़ना प्रारंभ कर सकें।

चूंकि पिछड़े हुए क्षेत्रों की संख्या बहुत अधिक होगी इसलिए सीमित संसाधनों को सारे क्षेत्रों में वितरित करना लाभप्रद नहीं होगा। संसाधनों का काम वितरण इन क्षेत्रों के विकास पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डालेगा। बड़े पैमाने पर विकास के लिए सीमित संख्या में क्षेत्रों का चुनाव करना होगा। ऐसा विशेषज्ञों

के दल द्वारा क्षेत्र सर्वेक्षण कर के ही किया जा सकता है। इस दल में पर्यावरण संरक्षक जीव वैज्ञानिक, पर्यावरणीय भूगर्भशास्त्री, मानवशास्त्री और पर्यटन नियोजक आदि सम्मिलित होने चाहिए ताकि वे प्राकृतिक क्षेत्रों की प्रथम सूची तैयार कर सकें। अनेक प्रकार के प्राकृतिक क्षेत्रों को चुनना जाना चाहिए जिनमें वह भी शामिल हों जिन्हें बिना अस्त व्यस्त किए बनाए रखना है, जो सदैव से वन प्रांत हैं और जहाँ जनता की पहुँच सीमित हो और वह क्षेत्र भी जिन्हें बड़े पैमाने पर मनोरंजन और अन्य विविध सुविधाओं के लिए संरक्षित करना है। यदि ऐसी नीतियाँ कार्यरत हों तो तीव्रगामी पर्यटन विकास और संतुलित क्षेत्रीय विकास के उद्देश्यों को समझने में कम ही समस्याएं सामने आएंगी। चूंकि तीव्रगामी विकास से बड़े पैमाने पर अधिशेष उत्पन्न होगा इसलिए संसाधनों को पिछड़े हुए की ओर भेजने की क्षमता और बढ़ जाएगी। विभिन्न क्षेत्रों के रहन सहन के स्तरों में बढ़ते हुए अन्तर को कम करने के लिए विकास के क्रमिक कार्यक्रम को सूत्रबद्ध करना पड़ेगा।

16.4 संतुलित विकास के लिए दिशा निर्देश

पिछले भाग की विवेचना के आधार पर स्पष्ट रूप से यह समझ लिया गया है कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक पर्यटन के समरूप विकास होना चाहिए। यहाँ इस संदर्भ में हम कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दे रहे हैं। हमारा यह सुझाव आदेशात्मक नहीं है किंतु हम सामान्य रूप से पर्यटन विकास के कार्यक्रम में निम्नलिखित उपाय सम्मिलित कर सकते हैं :

- कृषि और उद्योग के संसाधनों से रहित किंतु पर्यटन की संभावनाओं की दृष्टि से समृद्ध क्षेत्रों को पहले चुना जाना चाहिए और तब इनमें पर्यटन विकास के आर्थिक लाभों को मूल्यांकित करना चाहिए। इस मूल्यांकन के आधार पर इन पिछड़े हुए क्षेत्रों के लिए पर्यटन मास्टर प्लान बनाना चाहिए और इसके लिए प्राथमिकताएं और जरूरी साधनों का निर्धारण करना चाहिए।
- सबसे पहले अत्यंत पिछड़े हुए क्षेत्र को विकास के लिए चुनना आवश्यक नहीं है। चुनाव उनके विकासीय संभावना पर आधारित होना चाहिए। जल की आपूर्ति, ऊर्जा, परिवहन और संचार तथा पर्यटक आकर्षणों जैसे ऐतिहासिक स्थल और प्राकृतिक आकर्षण आदि के अनुसार प्राथमिकता निर्धारित की जानी चाहिए।
- जहाँ तक संभव हो योजना बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि स्थानीय जनता के जीवन स्तर और पर्यटकों के रहन सहन में बहुत फर्क न आ जाए।
- केवल लाभ कमाने के लिए पर्यटन योजना को पूर्ण रूप से निजी उद्यमों को नहीं सौंप देना चाहिए। सरकार को इसमें सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।
- स्थानीय लोगों के सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन के आधार को बनाए रखने और बढ़ावा देने पर बल दिया जाना चाहिए जिसमें क्षेत्रीय संसाधनों की सुरक्षा और उपयुक्त रूप से उपयोग सम्मिलित होने चाहिए।
- क्षेत्रीय पर्यटक परिषदों या अन्य संस्थाओं को इन्हीं सिद्धांतों पर संगठित किया जाना चाहिए ताकि क्षेत्र के पर्यटक की स्वभावगत गतिविधियों को समन्वित किया जा सके और उन क्षेत्रों के साथ जो इसी प्रकार के कार्य में लगे हुए हैं संबंध बनाकर रखा जा सके।

बोध प्रश्न 2

1) क्षेत्रीय असमानताओं को कम से कम करने में पर्यटन कहाँ तक सहयोग दे सकता है ? संक्षिप्त में टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) किसी पिछड़े हुए क्षेत्र में पर्यटन के विकास के लिए नीति की क्यों आवश्यकता होती है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) संतुलित विकास के लिए कुछ सुझाव दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

16.5 सारांश

पर्यटन योजना के तहत मात्रा में उपलब्ध संसाधनों को बाँटने का प्रयास किया जाता है ताकि उत्पादन, आय और रोजगार को अधिकतम सीमा तक बढ़ाया जा सके और उसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में संतुलित विकास सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा सके। हमारे देश में वर्तमान स्थिति यह स्पष्ट करती है कि प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों में समृद्ध होते हुए भी ये क्षेत्र पिछड़ते जा रहे हैं और विकास के किसी गंभीर सचेत प्रयास, उद्यम शीलता तथा प्रेरणा के अभाव में यह पिछड़ापन बढ़ता जा रहा है। अब विकास नीति निर्माताओं को चाहिए कि पिछड़े क्षेत्रों के लिए संतुलित विकास और निरंतर बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था के आधार पर उचित विकासीय कार्यों की योजना बनाएं और कार्यान्वयन का सच्चा और वास्तविक प्रयास करें। पर्यटन उद्योग में स्थानीय लोगों के लिए नए-नए अवसर उपलब्ध कराने की अपार क्षमता है जिसका उपयोग करके वे अपना जीवन स्तर ऊपर उठा सकते हैं।

16.6 शब्दावली

स्थगन : उपयोग में न रहने की स्थिति

सहायक : अतिरिक्त सहायता देने वाला

गुण : उद्देश्य से किए गए किसी कार्य का फल

चालन : किसी अच्छे परिणाम के लिए उचित परिस्थिति प्रदान करना

लूटमार : क्षति पहुँचाने का कार्य

विकास क्षेत्र	:	अत्यधिक बेरोजगारी का क्षेत्र जहाँ सरकार कई नौकरी के अवसर पैदा करने के लिए नए उद्योगों को प्रोत्साहित करती हैं।
पिछड़े प्रदेश	:	किसी प्रदेश का क्षेत्र जो शहर से दूर है और आर्थिक रूप से विकसित नहीं है।
जोखिम	:	खतरे में डालना
दुखी	:	कोई वस्तु अप्रिय अथवा अनचाही स्थिति में रहती हो
अनुकूलतम	:	अत्यंत लाभदायक
संभावना	:	विकसित होने और टिके रहने की क्षमता
निष्क्रिय	:	तदनुसार विकसित न होना
प्रेरणा	:	कोई ऐसी बात जो विकास में सहायक हो
घुटन	:	व्याकुल करने वाली गर्मी और ताजी हवा का अभाव

16.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 16.1

2) देखिए भाग 16.2

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 16.3

2) देखिए उपभाग 16.3.1

3) देखिए भाग 16.4